श्री आशुतोष लाहा (दमदम) : महोदय, क्या मैं मन्त्री महोदय को पश्चिम बंगाल के लोगों की भावना का आदर करते हुए तत्काल कदम उठाने के लिए बधाई दे सकता हूं ? (**व्यवधान**)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आपको लड़ना हो तो बाहर जाकर लड़िए।

[अनुवाद]

कोई भी बात कार्यवाही वृतान्त में सम्मिलित नहीं की जाएगी।

(**व्यवधान**)**

अध्यक्ष महोदय : इस सभा में क्या हो रहा है। कृपया बैठ जाइए। कु० ममता बनर्जी, क्या आप अपने स्थान पर बैठ जाएंगी ? कुछ नहीं हो रहा है। कृपया बैठ जाइए। अब श्री हरीश रावत।

[हिन्दी]

श्री हरीश रावत : अध्यक्ष जी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के माननीय सदस्यों को माननीय मन्त्री द्वारा इस सीरियल को फ्रस्टली बन्द कर देने में आपत्ति हो सकती है, उन्हें कांग्रेचुलेट करने में, लेकिन इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि इस सदन में यदि सबसे पहले किसी ने इस विषय को उठाया था तो मिस ममता बनर्जी ने ही उठाया था।

अध्यक्ष महोदय : रावत जी, आप जरा रुकिए। प्रधान मन्त्री का स्टेटमेन्ट होगा।

12.11 म० प०

हरारे में आयोजित गुट-निरपेक्ष देशों के आठवें शिखर-सम्मेलन तथा इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और थाईलैण्ड की अपनी यात्राओं के सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री का वक्तव्य

[अनुवाद]

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : मैं 1-7 सितम्बर तक हरारे में आयोजित गुट-निरपेक्ष देशों के आठवें शिखर-सम्मेलन में शामिल हुआ। यह एक अविस्मरणीय और ऐतिहासिक अवसर था। आन्दोलन की इस 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक विशेष स्मारक अधिवेशन का आयोजन किया गया था जिसमें विश्व शान्ति में गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के महत्वपूर्ण योगदान का स्मरण किया गया तथा इसके पितामह नेहरू, टीटो, सुकार्णो, एनक्रूमा तथा नासिर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों और लक्ष्यों की सतत् वैधता की पुनः पुष्टि की गई।

**कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

22 कार्तिक, 1908 (शक)

हरारे में आयोजित गुट निरपेक्ष देशों के आठवें शिखर-सम्मेलन तथा इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड और थाईलैण्ड की अपनी यात्राओं के सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री का वक्तव्य

इस शिखर सम्मेलन में आन्दोलन की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस आन्दोलन की एकता, दृढ़ता और एकजुटता को और अधिक मजबूत करने की दिशा में आन्दोलन के अध्यक्ष की हैसियत से भारत की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। हमारे नेतृत्व में इस आन्दोलन को आन्तरिक तौर पर समरसता और स्थायीत्व प्राप्त हुआ है और बाहरी तौर पर दृढ़ता एवं सक्रियता। अपने स्वरूप में अनेकता और विविधता किन्तु स्वतन्त्रता, शान्ति एवं न्याय के प्रति समान प्रतिबद्धता लिए हुए यह आन्दोलन अपने सिद्धान्तों पर सदैव अडिग रहा है।

हरारे में इस आन्दोलन की अध्यक्षता का दायित्व हमने जिम्बाब्वे के हाथों सौंप दिया। इस शिखर सम्मेलन में आज के युग के तीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आधारभूत प्रश्नों पर विचार-विमर्श केन्द्रित रहा। ये प्रश्न थे—दक्षिण अफ्रीका में मानवाधिकार, नामीबिया की स्वतन्त्रता तथा नाभिकीय विनाश के निरन्तर खतरे से मुक्त होकर एक स्वतन्त्र संसार में सांस लेने का समूची मानवता का अधिकार।

इस सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका पर एक विशेष घोषणा स्वीकार की गई तथा आक्रमण उपनिवेशवाद तथा जातीय पृथग्वासन को रोकने की कार्रवाई के निमित्त एक निधि की स्थापना जिसे "अफ्रीका कोष" की संज्ञा दी गई है। इस "अफ्रीका कोष" समिति का अध्यक्ष भारत है और उपाध्यक्ष जाम्बिया। इस कोष की स्थापना हमारे आन्दोलन के इस संकल्प को परिलक्षित करती है कि हम अग्ररेखी राज्यों के अपने भाईयों के साथ तथा दक्षिणी अफ्रीका के मुक्ति आन्दोलनों के साथ अपनी एकजुटता को ठोस रूप देना चाहते हैं। हमने इस कोष की स्थापना, इसके कार्य तथा इसके संचालन के तौर-तरीकों के सम्बन्ध में प्रारम्भिक काम शुरू कर दिया है। जातीय पृथग्वासन से जूझने, जातिवादी प्रीटोरिया सरकार के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाने और उस सरकार की ओर से प्रतिक्रिया स्वरूप की गई कार्रवाइयों से निपटने में उनकी सामर्थ्य को सुदृढ़ करने के इरादे से हमने अग्ररेखी राज्यों के साथ गहन विचार-विमर्श किया। इस महीने के आखीर में लुसाका में इस कोष समिति के वरिष्ठ अधिकारियों की एक बैठक होगी। कोष समिति के सदस्य देशों के राज्याध्यक्षों अथवा शासनाध्यक्षों के शिखर सम्मेलन से पूर्व एक मन्त्री-स्तरीय बैठक होगी जिसका आयोजन सम्भवतः दिल्ली में किया जाएगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि इस कोष को न सिर्फ गुट-निरपेक्ष आन्दोलन की सदस्य तथा गैर-सदस्य सरकारों से पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा बल्कि उन सभी संसदों, स्वैच्छिक संगठनों और व्यक्तियों से भी पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा जो दक्षिण अफ्रीका में सभ्यता के बुनियादी मानदण्डों के उल्लंघन से तथा प्रीटोरिया की ओर से आने वाले शान्ति के प्रति खतरे से गम्भीर रूप से चिंतित हैं।

इस आन्दोलन ने फिलिस्तीनियों के हित साधन के प्रति अपना दृढ़ समर्थन दोहराया तथा गुट-निरपेक्ष देशों की आजादी, उनकी स्वाधीनता और प्रभुसत्ता की रक्षा के प्रति अपना संकल्प व्यक्त किया जिन्हें विदेशी दस्तन्दाजी और दखलन्दाजी की ओर से खतरा है।

हरारे में निरस्त्रीकरण के सम्बन्ध में जो अपील सहर्ष स्वीकार की गई वह शान्ति तथा निरस्त्रीकरण के प्रति इस आन्दोलन की प्रतिबद्धता को तथा मानवीय अस्तित्व के प्रति बढ़ते हुए खतरे

के प्रति हमारी चिन्ता को परिलक्षित करती है। इस अपील में अमरीका और सोवियत संघ से यह अनुरोध किया गया है कि नाभिकीय युद्ध को भड़कने से रोकने के लिए वे तत्काल कदम उठाएं तथा एक व्यापक परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि की दिशा में प्रथम चरण के रूप में नाभिकीय परीक्षणों पर एक निश्चित अवधि तक प्रतिबन्ध लगा दें। शिखर सम्मेलन में "शान्ति एवं निरस्त्रीकरण की दिशा में छह राष्ट्र पांच महाद्वीपों की पहलकदमी" का समर्थन किया गया जिसकी शुरुआत दिल्ली में की गई थी।

विगत कुछ वर्षों में विश्व की आर्थिक स्थिति और कुछ अधिक बिगड़ी है। हरारे में आर्थिक सहयोग के लिए एक सक्रिय कार्यक्रम भी स्वीकार किया गया तथा सार्वभौम तथा आर्थिक मसलों पर की जाने वाली कार्रवाई में एकरूपता तथा तालमेल स्थापित करने के लिए एक समिति भी गठित की गई। एक राजनैतिक घोषणा में आज की दुनिया के सामने पेश अधिकांश कठिन मुद्दों पर आन्दोलन की एक राय प्रतिलक्षित है।

यह शिखर-सम्मेलन एक जल-प्रभात की भांति था। इस आन्दोलन की स्थापना की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर हमने आन्दोलन में अपनी आस्था की पुनः पुष्टि की तथा शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए एक जुट हुए विश्व समुदाय की अपनी परिकल्पना में अपनी आस्था की भी पुनः पुष्टि की। हम प्रधान मन्त्री मुगाबे की सफलता की कामना करते हैं कि वे अपने समक्ष चुनौतियों का सामना कर सकें तथा उन्हें अपना पूर्ण समर्थन और सहयोग देने का वचन देते हैं।

हरारे शिखर-सम्मेलन के दौरान मुझे अनेक नेताओं के साथ मिलने का सुअवसर मिला तथा उनसे अपनी मित्रता ताजा करने का भी जिनसे पहले मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका था। हमें विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर तथा बहुत से देशों के साथ अपने द्विपक्षीय सम्बन्ध सुदृढ़ करने के सम्बन्ध में अत्यन्त लाभप्रद विचार-विमर्श करने का मौका मिला।

मैंने 13-20 अक्तूबर तक इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और थाईलैण्ड की राजकीय यात्रा भी की।

हमारी और इन्डोनेशिया की सांस्कृतिक धरोहर एक सी है। हमने उपनिवेशवाद के खिलाफ एक सी लड़ाई लड़ी और अब हम दोनों गुट निरपेक्ष आन्दोलन के सहभागी हैं। राष्ट्रपति सुहार्तो के साथ मेरी बातचीत से यह पता चला कि प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर हम दोनों के दृष्टिकोण समान हैं। हमने यह स्वीकार किया कि व्यापार और आर्थिक क्षेत्रों में हमारे सम्बन्ध उसी स्तर के नहीं हैं जिस स्तर के राजनैतिक क्षेत्र में हैं। हमने अपने सम्बन्धों को और अधिक आर्थिक तथा वाणिज्यिक तत्व प्रदान करने के लिए दीर्घकालिक प्रबन्धों को तैयार करने तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आपसी क्रिया-कलापों को और अधिक सघन करने पर अपनी सहमति व्यक्त की। हमें उम्मीद है कि इन्डोनेशिया के साथ हमारे पारम्परिक सम्बन्ध भविष्य में और अधिक मजबूत और सुदृढ़ होंगे।

आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के साथ हमारे सम्बन्ध मित्रतापूर्ण तो रहे हैं लेकिन राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से बहुत सक्रिय नहीं। हमारे देश एशिया प्रशान्त क्षेत्र में आते हैं लेकिन हमने

अपने क्षेत्र की बजाय पश्चिम तथा अन्यत्र अधिक निहारा है। अब यह प्रक्रिया विपरीत दिशा मे जा रही है। मुझे उम्मीद है कि मेरी यात्रा से इस नई प्रक्रिया को और अधिक प्रोत्साहन मिला है।

नसाऊ और लन्दन में राष्ट्रमण्डल के अन्तर्गत मैंने प्रधान मन्त्री हाक के निकट सहयोग से कार्य किया ताकि प्रीटोरिया शासन के विरुद्ध प्रतिबन्ध लगाने की दिशा में एकराय कायम की जा सके। आस्ट्रेलिया की अपनी यात्रा के दौरान इस एकराय को सुदृढ़ करने तथा विश्व मत तैयार करने की प्रगति की हमने समीक्षा की। हमने अपने व्यापारिक और आर्थिक सम्बन्धों की भी समीक्षा की तथा हम इस बात पर सहमत हुए कि आदान-प्रदान को और तेज किया जाना चाहिए। व्यापारिक और आर्थिक सम्बन्धों को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए संयुक्त व्यापार परिषद् की स्थापना की गई। इस यात्रा के दौरान एक विज्ञान और प्रौद्योगिकी करार पर भी हस्ताक्षर हुए। हम कृषि, आन्तरिक्ष, मौसम-विज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों में अपने सहयोग को और बढ़ाने के लिए पारस्परिक कार्रवाई की बृहत्तर आवश्यकता पर भी सहमत हुए।

न्यूजीलैण्ड की यात्रा के दौरान प्रधान मन्त्री लांगो के साथ मेरी बातचीत में बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर हमारे दृष्टिकोणों की निकटता परिलक्षित हुई और यह बात भी हम दोनों ही अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को सुदृढ़ करने के इच्छुक हैं। हम इस बात पर सहमत थे कि कृषि और वनरोपण ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें सहयोग लाभप्रद हो सकता है। मेरी इस यात्रा के दौरान व्यापार तथा दोहरे कराधान के परिहार के करारों पर भी हस्ताक्षर हुए।

थाईलैण्ड की मेरी संक्षिप्त यात्रा भारत के किसी प्रधान मन्त्री की पहली यात्रा थी। इस देश में, जिसके साथ हमारे गहरे और अटूट सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, हमारा अत्यन्त हार्दिक स्वागत किया गया। मुझे थाई-नरेश के साथ दिलचस्प बातचीत का और प्रधान मन्त्री प्रेम के साथ लाभप्रद विचार-विमर्श का मौका मिला। इस यात्रा के दौरान विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर एक प्रोतोकोल पर भी हस्ताक्षर हुए। हमने एक संयुक्त आयोग की स्थापना की सम्भावना पर विचार करना भी स्वीकार किया। मुझे पूरा विश्वास है कि आगे आने वाले वर्षों में हम थाईलैण्ड के साथ अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को विकसित करने की दिशा में अब तक के अछूते क्षेत्रों को सक्रिय कर सकेंगे।

दक्षिण-पूर्व एशिया एवं प्रशान्त के इन चार देशों की मेरी यात्राओं से हमें उस सद्भाव को मूर्त रूप देने का अवसर मिला जो इन क्षेत्रों में भारत के प्रति विद्यमान है तथा राजनैतिक सम्बन्धों को अधिक ठोस आधार प्रदान करने और भविष्य में व्यापार एवं आर्थिक सहयोग को बढ़ाने का सुअवसर भी। यद्यपि मेरी ये यात्राएं अनिवार्यतः बहुत लघु अवधि की थी लेकिन इनके निष्कर्ष पर हमारा प्रसन्न होना अकारण नहीं।

श्री एस० जयपाल रेड्डी (महबूबनगर) : महोदय, वक्तव्य इतनी देरी से क्यों दिया गया है।

अध्यक्ष महोदय : कृपया शान्त रहिए।

[हिन्दी]

श्री हरीश रावत (अल्मोड़ा) : मैं प्रधान मन्त्री जी की इस सफलतम विदेश यात्रा के लिए इस सारे हाऊस की तरफ से उनको बहुत-बहुत बधाई देना चाहूंगा।

[अनुवाद]

श्री एस० जयपाल रेड्डी : बधाई भी देर से दी जा रही है।

12.20 म० प०

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यानाकर्षण

दूरदर्शन धारावाहिक 'राज से स्वराज' में आई० एन० ए० सम्बन्धी मुकदमों का कथित विकृत रूपान्तर

—जारी

[हिन्दी]

श्री हरीश रावत : अध्यक्ष महोदय, इस माननीय सदन के जो दूसरे पक्ष के सदस्य हैं, उनको इस बात में कुछ आपत्ति थी कि माननीय अजीत पांजा को इस 'राज से स्वराज्य' सीरियल को, जिसमें नेताजी और हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के सम्बन्ध में प्रकरणों को तोड़मरोड़ कर दिखाया गया है, बन्द करने के लिए हम उनको क्यों बधाई दे रहे हैं। यह एक तथ्य है कि माननीय अजात पांजा को ज्यों ही इस बात की सूचना मिली कि 'राज से स्वराज्य' सीरियल में कुछ तथ्यों को इस तरीके से दिखाया गया है, जिससे लोगों की भावनाओं को चोट पहुंच रही है, तो उन्होंने तत्कालिक प्रभावी कदम उठाया। उनसे जो हमारी कांग्रेस के साथी मिले, उनकी बातों को सुनकर, उन्होंने इस सीरियल को बन्द करने का निर्णय लिया और इसके लिए मैं समझता हूं, वे निश्चित तौर पर बधाई के पात्र हैं।

श्री अमरराय प्रधान (कूच बिहार) : इसकी जिम्मेदारी किस की थी···(व्यवधान)···

श्री हरीश रावत : निश्चित तौर पर अपनी जिम्मेदारी को उन्होंने पूरा किया है और जिम्मेदारी को ठीक तरीके से निभाने के लिए उनको बधाई दे रहे हैं। मैंने कोई गलत बात नहीं कही है।···(व्यवधान)···

अध्यक्ष महोदय : आप मेरे से बात करें। इन्हें बोलने दें, यह तो इनका धर्म ही है।

श्री हरीश रावत : मैं तो आपकी तरफ ही देख रहा था। जरा उनकी तरफ देख लिया कि इन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। हमारी साथी कुमारी ममता बनर्जी, माननीय सदस्य, जादवपुर, भी बधाई की पात्र है। सबसे पहले इस हाऊस में इस मामले को उन्होंने उठाया था। अध्यक्ष जी, हम आपके भी आभारी हैं कि इतने महत्वपूर्ण विषय पर हाऊस में चर्चा लाने के लिए आपने कृपा की। माननीय मन्त्री जी का जो बयान है, उसमें उन्होंने बहुत सी बातें बताने की कोशिश की है।